

सामाजिक कार्य अभ्यास, सीखना एवं निर्देशात्मक प्रक्रिया

प्रस्तावना

सामाजिक कार्य एक व्यावहारिक एवं पेशेवर विषय है। इसमें केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं होता, बल्कि विद्यार्थियों को व्यक्तियों, समूहों और समुदायों के साथ प्रत्यक्ष कार्य करने का अनुभव भी आवश्यक होता है। सामाजिक कार्य शिक्षा में कक्षा में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान को क्षेत्रीय परिस्थितियों में लागू करने की प्रक्रिया को सामाजिक कार्य अभ्यास कहा जाता है। इस अभ्यास को प्रभावी बनाने में सीखने और निर्देशात्मक प्रक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

1. सामाजिक कार्य अभ्यास का अर्थ

सामाजिक कार्य अभ्यास से आशय ऐसी व्यावसायिक गतिविधियों से है जिसमें सामाजिक कार्यकर्ता व्यक्ति, परिवार, समूह, समुदाय और संस्थाओं के साथ कार्य करके उनकी समस्याओं को समझने तथा उनके समाधान और सशक्तीकरण में सहायता करता है।

सामाजिक कार्य के विद्यार्थियों के लिए क्षेत्रकार्य, केस स्टडी, समूह कार्य, सामुदायिक कार्य, सर्वेक्षण तथा संस्थागत प्रशिक्षण सामाजिक कार्य अभ्यास के प्रमुख माध्यम हैं।

2. सामाजिक कार्य में सीखने का अर्थ

सीखना (Learning) वह निरंतर प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभव, अभ्यास, प्रशिक्षण और शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन आता है।

सामाजिक कार्य के विद्यार्थी सीखने के माध्यम से—

सामाजिक समस्याओं को समझते हैं।

सामाजिक कार्य के सिद्धांतों को व्यवहार में लागू करना सीखते हैं।

संचार एवं साक्षात्कार कौशल विकसित करते हैं।

व्यक्ति, समूह और समुदाय के साथ कार्य करना सीखते हैं।

पेशेवर मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों को व्यवहार में अपनाते हैं।

3. निर्देशात्मक प्रक्रिया का अर्थ

निर्देशात्मक प्रक्रिया (Instructional Process) वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक या प्रशिक्षक विद्यार्थियों को निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार ज्ञान, कौशल और अनुभव प्रदान करता है तथा उनके सीखने का मार्गदर्शन करता है।

सरल शब्दों में—

उद्देश्य निर्धारित करना → शिक्षण की योजना बनाना → सीखने के अनुभव देना → मार्गदर्शन करना → अभ्यास

कराना → मूल्यांकन करना

निर्देशात्मक प्रक्रिया का क्रम है।

4. सामाजिक कार्य अभ्यास में निर्देशात्मक प्रक्रिया

(1) सीखने के उद्देश्यों का निर्धारण

सबसे पहले यह निर्धारित किया जाता है कि विद्यार्थी सामाजिक कार्य अभ्यास के माध्यम से क्या सीखेंगे।

जैसे —

साक्षात्कार करना,

केस रिकॉर्ड तैयार करना,

समूह का संचालन करना,

समुदाय का अध्ययन करना,

समस्या की पहचान करना,

सामाजिक कार्य के नैतिक मूल्यों का पालन करना।

(2) सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना

विद्यार्थियों को सामाजिक कार्य के सिद्धांत, अवधारणाएँ, मूल्य एवं विधियाँ समझाई जाती हैं।

(3) प्रदर्शन एवं उदाहरण

शिक्षक या क्षेत्रकार्य पर्यवेक्षक किसी कौशल को करके दिखाता है। उदाहरण के लिए, साक्षात्कार की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया जा सकता है।

(4) क्षेत्रीय अभ्यास

विद्यार्थियों को वास्तविक सामाजिक परिस्थितियों में कार्य करने का अवसर दिया जाता है। इससे कक्षा में सीखे सिद्धांतों को व्यवहार में लागू करना संभव होता है।

(5) पर्यवेक्षण

फील्डवर्क सुपरवाइजर विद्यार्थी के कार्य का निरीक्षण करता है और आवश्यक मार्गदर्शन देता है।

(6) प्रतिक्रिया (Feedback)

विद्यार्थी के कार्य की कमियों और उपलब्धियों के बारे में समय पर प्रतिक्रिया दी जाती है। इससे विद्यार्थी अपने कार्य में सुधार कर सकता है।

(7) पुनः अभ्यास

प्रतिक्रिया प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी उसी कौशल का दोबारा अभ्यास करता है। इससे उसकी दक्षता बढ़ती है।

(8) मूल्यांकन

विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल, व्यवहार, पेशेवर दृष्टिकोण और क्षेत्रकार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाता है।

5. सामाजिक कार्य अभ्यास में सीखने के प्रमुख तरीके

1. अनुभवात्मक सीखना

विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करके सीखता है। सामाजिक कार्य शिक्षा में क्षेत्रकार्य इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है।

2. निरीक्षण द्वारा सीखना

विद्यार्थी अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ता या पर्यवेक्षक के कार्य को देखकर विभिन्न कार्य-कौशल सीखता है।

3. अभ्यास द्वारा सीखना

साक्षात्कार, केस रिकॉर्ड, समूह बैठक, सर्वेक्षण आदि का बार-बार अभ्यास करने से कौशल विकसित होता है।

4. चर्चा एवं समूह-अधिगम

विद्यार्थी अपने अनुभवों पर चर्चा करके समस्याओं और उनके समाधान को बेहतर ढंग से समझते हैं।

5. समस्या-समाधान द्वारा सीखना

विद्यार्थी वास्तविक सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करके उनके समाधान के संभावित तरीकों पर विचार करते हैं।

6. सामाजिक कार्य अभ्यास में निर्देश के महत्व

1. विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशल प्रदान करता है।

2. सिद्धांत और व्यवहार के बीच संबंध स्थापित करता है।

3. विद्यार्थियों में पेशेवर आत्मविश्वास विकसित करता है।

4. सामाजिक कार्य के मूल्यों और नैतिकता को व्यवहार में लागू करना सिखाता है।

5. वास्तविक सामाजिक समस्याओं को समझने में सहायता करता है।

6. संचार, साक्षात्कार, अवलोकन और रिकॉर्ड-लेखन जैसे कौशल विकसित करता है।

7. पर्यवेक्षक की प्रतिक्रिया से विद्यार्थियों को अपनी गलतियों में सुधार करने का अवसर मिलता है।

8. विद्यार्थी को भविष्य के पेशेवर सामाजिक कार्य के लिए तैयार करता है।

7. सामाजिक कार्य अभ्यास सीखने की प्रक्रिया का सरल क्रम

सैद्धांतिक ज्ञान → प्रदर्शन → क्षेत्रीय अनुभव → पर्यवेक्षण → प्रतिक्रिया → पुनः अभ्यास → मूल्यांकन → सुधार

निष्कर्ष

सामाजिक कार्य शिक्षा में अभ्यास, सीखना और निर्देश एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। केवल सैद्धांतिक ज्ञान से सामाजिक कार्यकर्ता की व्यावसायिक दक्षता पूरी तरह विकसित नहीं होती। क्षेत्रकार्य, अनुभव, अभ्यास, पर्यवेक्षण और प्रतिक्रिया के माध्यम से विद्यार्थी सामाजिक कार्य के ज्ञान को व्यवहार में लागू करना सीखता है। इसलिए प्रभावी निर्देशात्मक प्रक्रिया सामाजिक कार्य विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, पेशेवर दृष्टिकोण, नैतिकता और समस्या-समाधान क्षमता विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।